अव्यय

अव्यय और उसके प्रकार

कुछ शब्दों में बदलाव नहीं होता, इसलिए वे हमेशा एक रुप में बने रहते हैं। उनके एक ही रुप के कारण, इन्हें अव्यय कहते हैं।

दूसरे शब्दों में अव्यय का अर्थ है अ + व्यय = जिनका व्यय न हो अर्थात् जो बिना विचार के हो इस कारण इन्हें बदला नहीं जा सकता, इसलिए इनको अविकारी शब्दों के नाम से भी जाना जाता है।

परिभाषा - जिन शब्दों में लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि से मिलकर विकार (रुप में बदलाव) नहीं आता, अव्यय कहलाते हैं।

जैसे - ओह, अरे, तेज़, आज, परंतु, किंतु।

अव्यय चार प्रकार के होते हैं -

(1) क्रिया विशेषण

(2) विस्मयादिबोधक

(3) संबंधबोधक

(4) समुच्चयबोधक

विशेषण व क्रिया विशेषण में अंतर -

विशेषण :- विशेषण के द्वारा हम किसी, वस्तु, व्यक्ति या स्थान की विशेषता बताते हैं।

क्रिया विशेषण :- क्रिया विशेषण में हम क्रिया की (किसी कार्य की) विशेषता बताते हैं।

(i) गोविंदा <u>अच्छा</u> है।

(ii) गोविंदा बहुत <u>नाचता</u> है।

यहाँ 'अच्छा है' द्वारा गोविंदा की विशेषता बताई गई है इसलिए यहाँ विशेषण है और गोविंदा बहुत नाचता है में 'नाचता' की विशेषता बताई गई है इसलिए यहाँ क्रिया विशेषण है।

क्रिया विशेषण

जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, वे क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसे -

(1)

शोभा धीरे-धीरे चल रही है।

यहाँ **चल रही** है क्रिया है, **धीरे-धीरे** चलने (क्रिया) की विशेषता है, अर्थात यह क्रिया विशेषण है।

(2) हिमाशुँ यहाँ रहता है।

'यहाँ' शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट कर रहा है।

(3) रवि प्रतिदिन पढ़ता है।

यहाँ 'प्रतिदिन' क्रिया की विशेषता प्रकट कर रहा है।

सभी क्रिया विशेषण शब्द अविकारी शब्द होते हैं, अर्थात् लिंग, वचन और कारक के कारण इनका रुप परिवर्तित नहीं होता। इसको इस तरह भी कहा जा सकता है - क्रिया की विशेषता बताने वाले अविकारी शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं और इनमें बदलाव नहीं किया जा सकता।

क्रिया-विशेषण के चार भेद माने जाते हैं -

(1) कालवाचक क्रिया-विशेषण

(2) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण

(3) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण

(4) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण

(1) कालवाचक क्रिया-विशेषण -

जिस क्रिया-विशेषण शब्द से कार्य के होने का समय ज्ञात होता हो, वह कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाता है; जैसे - आज, कल, परसों, कब, कभी-कभी, प्रतिदिन, प्राय:, बाद में, अक्सर, तुरंत, नित्य, सदा, प्रात:, निरन्तर, हमेशा, जब, तब, यदा, कदा, तभी, तत्काल, शीघ्र, पूर्व, घड़ी-घड़ी, पीछे, अब, तत्पश्चात्, तदंतर, कल, कई बार, अभी, फिर इत्यादि।

(i) आज वह नहीं आया।

यहाँ आज शब्द से क्रिया के काल (दिन) का पता चलता है, इसीलिए यह कालवाचक क्रिया विशेषण है।

(ii) मैंने अभी-अभी खाना खाया है।

यहाँ अभी-अभी से समय का बोध हो रहा है, इसलिए यह कालवाचक क्रिया विशेषण है।

इसी तरह -

(iii)

यहाँ थोड़ी देर कालवाचक क्रिया विशेषण है।

यहाँ 'कभी-कभी', 'कल', 'नित्य' क्रिया की विशेषता बता रहे हैं, इसलिए यह कालवाचक क्रिया-विशेषण है।

(2) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण -

जिन शब्दों से कार्य के होने के स्थान का ज्ञात हो (बोध हो), उसे स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसे - भीतर, बाहर, अंदर यहाँ, वहाँ, जहाँ, इधर, उधर, किधर, चारों ओर, कहाँ, ऊपर, नीचे, पास, दूर, अंदर, बाहर, आस, अन्यत्र, इस ओर, उस ओर, दाएँ, बाएँ, आदि।

(i) भीतर बहुत गर्मी है।

यहाँ भीतर से स्थान का बोध हो रहा है, इसलिए यहाँ स्थानवाचक क्रिया विशेषण है।

(ii) घर से बाहर मत निकलना।

'बाहर' शब्द से भी स्थान का पता चल रहा है, अत: यहाँ स्थान वाचक क्रिया विशेषण है।

(3) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण -

जो शब्द क्रिया का परिमाण बतलाते हैं, वे 'परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण' कहलाते हैं।

उदाहरण - थोड़ा-थोड़ा, अधिक, अत्यंत, बहुत, कुछ, अल्प, पर्याप्त, प्रभूत, कम, न्यून, बूँद-बूँद, स्वलप, केवल, प्राय: अनुमानत:, जितना, उतना, ज़रा, इत्यादि।

(i) यहाँ थोड़ा-सा पानी है।

<u>थोड़ा-सा</u> से पानी के परिमाण का पता चल रहा है, इसलिए यहाँ परिमाणवाचक क्रिया विशेषण है।

(ii) <u>अधिक</u> काम क्यों करते हो?

<u>अधिक</u> शब्द से भी काम के परिमाण का बोध हो रहा है, अत: यहाँ परिमाणवाचक क्रिया विशेषण है।

(4) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण -

जो शब्द क्रिया के होने की रीति या विधि संबधी विशेषता बताता है, उसे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं;

जैसे - अचानक, सहसा, एकाएक, झटपट, धड़ाधड़, ध्यानपूर्वक, ठीक, वास्तव में, सचमुच, अवश्य, निस्संदेह, शायद, बेशक, संभव है, बहुत करके, कदाचित, हाँ, सच, ठीक, ज़रुर, जी, किसलिए, अतएव, क्योंकि, न, नहीं, कभी नहीं, मत, कदापि नहीं इत्यादि।

(i) <u>अकस्मात</u> ही बारिश होने लगी।

(ii) <u>कदाचित्</u> कौरवों का पाँडवों को राज्य ना देना गलत था।

(iii) <u>ध्यानपूर्वक</u> अपनी किताब को पढ़ो।

सम्बंधबोधक अव्यय

संबंधबोधक अव्यय अपने पूर्वपद के साथ संबंध जोड़ता है। पद के पहले हमेशा किसी न किसी परसर्ग की अपेक्षा रहती है;

जैसे - की ओर, से दूर, के कारण, की जगह, के साथ, के वास्ते, की अपेक्षा, के अनुसार, की तरफ़, के पास, के बाहर, के अन्दर, के सामने, के नीचे इत्यादि।

(i) हम निलेश <u>के कारण</u> अपनी बस नहीं पकड़ पाए।

(ii) राजेश क्रिकेट के द्वारा नाम अर्जित करना चाहता है।

(iii) मैदान में सचिन की ओर एक प्रशंसक दौड़ा।

समुच्चयबोधक अव्यय

जो अव्यय, पदों, पदबंधों और उपवाक्यों को जोड़ते हैं, वह समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं;

जैसे – कि, अथवा, और, क्योंकि, इसलिए, तथा, एवं, व, किन्तु, मगर, परन्तु, लेकिन, इस कारण, नहीं तो, ताकि, क्योंकि, या, अन्यथा, चाहो, न आदि।

उदाहरण -

(1) राम की पिटाई हुई क्योंकि उसने कक्षा का कार्य नहीं किया था।

(2) माता एवं पिता का सदैव सम्मान करना चाहिए।

(3) हम तुम्हारे घर जाते परंतु किसी कारणवश ना आ सके।

(4) श्याम के पैसे लौटा दो अन्यथा इसका परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहो।

इसके दो प्रकार होते हैं -

(1) समानाधिकरण समुच्चयबोधक

(2) व्याधिकरण समुच्चयबोधक

(1) समानाधिकरण समुच्चयबोधक - जिन शब्दों के द्वारा दो समान वाक्यांश पदों और वाक्यों को आपस में जोड़ा जा सके वह समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते है; जैसे - एवं, तथा, किंतु, वरना, परन्तु, अत:, बल्कि आदि।

(i) श्याम एवं राम, ओम शांति ओम देखने गए।

(ii) राम टिकट लेने गया परन्तु सारी टिकट बुक हो चुकी थी।

(2) व्याधिकरण समुच्चयबोधक - जिन शब्दों के द्वारा एक प्रधान वाक्य में एक अथवा एक से अधिक आश्रित वाक्य जुड़ते हैं, उन्हें व्याधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं; जैसे -

क्योंकि, तो, यदि, जब, तब, ताकि, अर्थात्, मानो, जो, आदि।

(i) तुम जल्दी आओ ताकि हम क्रिकेट खेलने जाएँ।

(ii) ऐसा चलता है मानो सुपर मॉडल हो।

विस्मयादिबोधक अव्यय

विस्मयादिबोधक अव्यय वे रुप हैं जो शोक, घृणा, आश्चर्य, हर्ष आदि भावों को प्रकट करने के लिए अचानक ही मुँह से निकल जाते हैं। परन्तु इनका वाक्य के अन्य शब्दों से कोई सम्बन्ध नहीं बनता।

हमेशा ये शब्द किसी भी वाक्य के आरंभ में प्रयोग में आते हैं; जैसे - आह!, हाय!, बाप रे!, अरे!, छी!, शाबाश! इत्यादि।

उदाहरण -

(1) वाह! अति सुन्दर है।

(2) अरे! तुम यहाँ कैसे?

(3) छी:-छी:! कितना गन्दा है।

(4) सावधान! आगे गड्ढ़ा है।

(5) अच्छा! हम भी चल रहे हैं।

(6) शाबाश! बहुत अच्छा लिखा है।

(7) वाह! क्या फिल्म है।

(8) हाय! तुम्हें क्या हुआ।

(9) शाबाश! तुमने बहादुरी का काम किया।

(10) छी! कितनी गंदी जगह है।